Vol-13 Special Issue- 1.4 ISSN- 2349-7076

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter)
Patron: Prof. R. G. Kothari
Chief Editor: Prof. Jignesh B. Patel
Email:- Mo. 9429429550 ctefeduinspire@gmail.com

भगवद्गीता पर आधारित समग्र विकास मॉडल : सामुदायिक सौहार्द एवं वैश्विक शांति के लिए एक दार्शनिक - शैक्षिक रूपरेखा

डॉ. प्रभाराजे शर्मा
सहाय्यक प्राध्यापक
राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर

सारांश

समकालीन वैश्विक समाज हिंसा, सांप्रदायिक संघर्ष, सामाजिक विघटन, पर्यावरणीय संकट तथा मानसिक असंतुलन जैसी जटिल चुनौतियों का सामना कर रहा है। आधुनिक विकास प्रतिमान मुख्यतः आर्थिक प्रगति और तकनीकी दक्षता पर आधारित होने के कारण मानव-मूल्यों, नैतिकता और आंतरिक संतुलन को पर्याप्त महत्व नहीं दे सके हैं। इस संदर्भ में भारतीय दार्शनिक परंपरा का प्रतिनिधि ग्रंथ श्रीमद्भगवद्गीता एक समग्र मानव-केन्द्रित विकास दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जो आत्मानुशासन, नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व और सार्वभौमिक करुणा को एकीकृत करता है। प्रस्तुत शोध गीता के प्रमुख सिद्धांतों—समत्व, निष्काम कर्म, लोकसंग्रह, दैवी सम्पद, समदर्शिता तथा अद्वेष्टा भाव—के आधार पर एक बहु-स्तरीय समग्र विकास मॉडल का दार्शनिक प्रतिपादन करता है। अध्ययन दार्शनिक-विश्लेषणात्मक, पाठ-व्याख्यात्मक तथा तुलनात्मक पद्धति पर आधारित है। प्रस्तावित मॉडल व्यक्ति से वैश्विक समाज तक शांति की क्रमिक संरचना प्रस्तुत करता है और संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य-16 तथा UNESCO की शांति-शिक्षा अवधारणा के साथ सैद्धांतिक संगति स्थापित करता है। निष्कर्षतः, गीता-आधारित समग्र विकास मॉडल समकालीन वैश्विक संकटों के समाधान हेतु एक सार्वभौमिक नैतिक-शैक्षिक ढाँचा प्रदान करता है।

प्रस्तावना

21वीं सदी में वैश्विक संपर्क और तकनीकी प्रगति ने मानव समाज को अभूतपूर्व भौतिक सुविधाएँ प्रदान की हैं, किंतु इसके साथ सामाजिक-मानसिक असंतुलन, हिंसा, धार्मिक कट्टरता, सांस्कृतिक विभाजन और नैतिक संकट भी बढ़े हैं। आधुनिक विकास प्रतिमान की प्रमुख सीमा यह है कि वह मानव को आर्थिक इकाई के रूप में देखता है, जबकि शांति और सामाजिक समरसता के लिए नैतिक-आध्यात्मिक आयाम आवश्यक हैं यद्यपि भगवद्गीता पर अनेक दार्शनिक, धार्मिक और नैतिक अध्ययन उपलब्ध हैं, तथापि अधिकांश अध्ययन व्यक्तिगत मोक्ष, धर्म या योग-साधना पर केंद्रित हैं। यद्यपि भगवद्गीता पर व्यापक दार्शनिक, धार्मिक एवं नैतिक अध्ययन उपलब्ध हैं, अधिकांश शोध व्यक्तिगत मोक्ष, योग-साधना या आध्यात्मिक अनुशासन पर केंद्रित रहे हैं (Radhakrishnan, 1948; Tilak, 1956)। समकालीन शांति-अध्ययन, वैश्विक नागरिकता शिक्षा और सामाजिक समरसता के संदर्भ में गीता के सिद्धांतों को एक समग्र विकास मॉडल के रूप में व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने वाले अध्ययन अत्यंत सीमित हैं। विशेष रूप से गीता के समत्व, लोकसंग्रह और अद्वेष्टा भाव को आधुनिक global peace frameworks (UN SDG-16; UNESCO peace education) के साथ सैद्धांतिक रूप से एकीकृत करने का प्रयास पर्याप्त रूप से विकसित नहीं हुआ है। अतः प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य गीता को केवल आध्यात्मिक ग्रंथ के रूप में नहीं, बल्कि एक **Holistic Socio-Educational Development Framework** के रूप में पुनर्परिभाषित करना है।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

सामग्री एवं पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक (Qualitative) दार्शनिक शोध-रचना पर आधारित है, जिसका उद्देश्य श्रीमद्भगवद्गीता में निहित दार्शनिक सिद्धांतों का समकालीन सामाजिक, शैक्षिक तथा वैश्विक शांति-विमर्श के संदर्भ में विश्लेषण करना है। अध्ययन में प्राथमिक पाठ-स्रोत के रूप में श्रीमद्भगवद्गीता के मूल श्लोकों का आलोचनात्मक पाठ-व्याख्यात्मक (critical hermeneutic) अध्ययन किया गया है। इसके साथ ही व्याख्यात्मक ढाँचे के रूप में वेदान्तीय नैतिकता, आधुनिक नैतिक दर्शन, शांति-शिक्षा सिद्धांत तथा वैश्विक नागरिकता शिक्षा के सिद्धांतों को अपनाया गया, जिससे गीता के विचारों को समकालीन संदर्भ में समझा जा सके। विश्लेषणात्मक प्रक्रिया बहु-स्तरीय रही। प्रथम चरण में गीता के श्लोकों का संदर्भानुसार दार्शनिक एवं पाठ-व्याख्यात्मक विश्लेषण किया गया, जिससे उनके मूल अर्थ, संदर्भ और व्यावहारिक निहितार्थ स्पष्ट हो सकें। द्वितीय चरण में प्रमुख अवधारणाओं—जैसे समत्व, निष्काम कर्म, लोकसंग्रह, दैवी सम्पद, समदर्शिता आदि—की पहचान एवं संकल्पनात्मक वर्गीकरण किया गया। तृतीय चरण में इन अवधारणाओं को आधुनिक शांति-अध्ययन, नैतिक नेतृत्व, सामाजिक समरसता तथा वैश्विक नागरिकता सिद्धांतों के साथ तुलनात्मक रूप से जोड़ा गया, जिससे उनके समकालीन प्रासंगिक आयामों को समझा जा सके। अंतिम चरण में इन सभी विश्लेषणों के आधार पर एक समग्र बहु-स्तरीय विकास ढाँचे (holistic development model) का निर्माण किया गया, जो व्यक्ति से लेकर वैश्विक समाज तक शांति और सामुदायिक सौहार्द की क्रमिक संरचना प्रस्तुत करता है।

गीता-आधारित विकास रूपरेखा के दार्शनिक आधार

समत्व : मनोवैज्ञानिक संतुलन का सिद्धांत

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते॥

समत्व गीता का केंद्रीय मनो-दार्शनिक सिद्धांत है, जिसे केवल भावनात्मक नियंत्रण या मानसिक धैर्य तक सीमित नहीं किया जा सकता। यह अस्तित्वगत संतुलन की वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति सुख-दुःख, लाभ-हानि तथा सफलता-असफलता की द्वंद्वात्मक स्थितियों से ऊपर उठकर विवेकपूर्ण दृष्टि विकसित करता है। आधुनिक मनोविज्ञान में इसे संज्ञानात्मक स्थिरता (cognitive stability) तथा भावनात्मक नियमन (emotional regulation) के समकक्ष माना जा सकता है। समत्व व्यक्ति को आवेगपूर्ण या हिंसात्मक प्रतिक्रिया से मुक्त कर संवादात्मक और सहिष्णु दृष्टिकोण अपनाने की क्षमता प्रदान करता है, जिससे सामाजिक संघर्षों की संभावना कम होती है।

निष्काम कर्म : नैतिक क्रिया सिद्धांत

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि॥

निष्काम कर्म परिणाम-आसक्ति से मुक्त कर्तव्यनिष्ठ क्रिया का सिद्धांत है, जो व्यक्ति को स्वार्थ-केन्द्रित प्रेरणा से हटाकर उत्तरदायी नैतिक आचरण की ओर प्रेरित करता है। यह दृष्टिकोण आधुनिक व्यावसायिक नैतिकता, सार्वजनिक प्रशासन तथा 'servant leadership' सिद्धांतों से सैद्धांतिक रूप से संगत है। निष्काम कर्म का तात्पर्य निष्क्रियता नहीं, बल्कि परिणाम की आसक्ति से मुक्त सक्रिय उत्तरदायित्व है, जो सामाजिक विश्वास और संस्थागत पारदर्शिता को मजबूत करता है।

लोकसंग्रह : सामाजिक एकीकरण का सिद्धांत

कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः।
लोकसंग्रहमेवापि संपश्यन्कर्तुमर्हसि॥

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

लोकसंग्रह गीता का प्रमुख सामाजिक सिद्धांत है, जिसका तात्पर्य समाज की एकता, सामूहिक कल्याण तथा उत्तरदायी नेतृत्व से है। यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि व्यक्तिगत कर्म केवल निजी लाभ तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि समाज की संरचना और स्थिरता को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए। आधुनिक समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह सिद्धांत नागरिक उत्तरदायित्व (civic responsibility), सहभागी शासन (participatory governance) तथा सामाजिक पूंजी के निर्माण के समकक्ष है।

दैवी सम्पद : नैतिक पूंजी का आधार

देवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते॥

गीता में वर्णित दैवी सम्पद—जैसे अहिंसा, सत्य, क्षमा, दया, शुचिता और विनम्रता—को सामाजिक नैतिक पूंजी (moral capital) के रूप में समझा जा सकता है। किसी भी समाज की स्थिरता केवल विधिक संरचनाओं पर निर्भर नहीं होती, बल्कि उन नैतिक मूल्यों पर आधारित होती है जिनसे सामाजिक विश्वास और सहयोग का निर्माण होता है। इन गुणों के अभाव में संस्थागत ढाँचे कमजोर पड़ जाते हैं और सामाजिक अस्थिरता बढ़ती है।

समदर्शिता : सार्वभौमिक मानव समानता

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि |
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ||

समदर्शिता सामाजिक भेदभाव को समाप्त करने वाला गहन दार्शनिक सिद्धांत है, जो सभी प्राणियों में समान चेतना का अनुभव करने की प्रेरणा देता है। यह दृष्टिकोण आधुनिक मानवाधिकार विमर्श से पूर्णतः संगत है, किंतु उससे अधिक गहरा है क्योंकि यह समानता को केवल विधिक अधिकार नहीं, बल्कि अस्तित्वगत एकता के आधार पर स्थापित करता है।

गीता-आधारित समग्र विकास मॉडल (Holistic Development Model)

गीता-आधारित समग्र विकास मॉडल को पाँच आयामों में समझा जा सकता है। प्रथम आयाम आत्म-परिवर्तन का है, जिसमें आत्मनियंत्रण, ध्यान और समत्व के माध्यम से व्यक्ति आंतरिक संतुलन विकसित करता है। द्वितीय आयाम नैतिक चरित्र-निर्माण का है, जिसमें दैवी सम्पद के गुण व्यक्ति को नैतिक रूप से सुदृढ़ बनाते हैं। तृतीय आयाम सामाजिक उत्तरदायित्व का है, जिसमें निष्काम कर्म और लोकसंग्रह के माध्यम से व्यक्ति समाज के प्रति उत्तरदायी बनता है। चतुर्थ आयाम सांस्कृतिक समन्वय का है, जो धार्मिक सहिष्णुता और बहुलतावाद को स्वीकार करता है। पंचम आयाम वैश्विक करुणा का है, जिसमें समदृष्टि और अद्वेष्टा भाव के माध्यम से विश्व-बंधुत्व की स्थापना होती है।

शैक्षिक एवं नीतिगत निहितार्थ (Educational and Policy Implications)

शैक्षिक स्तर पर यह मॉडल मूल्य-आधारित पाठ्यक्रम, सहानुभूति प्रशिक्षण तथा संघर्ष-समाधान शिक्षा के विकास में उपयोगी सिद्ध हो सकता है। शासन-व्यवस्था में यह नैतिक नेतृत्व प्रशिक्षण तथा सामुदायिक सेवा-आधारित नीतियों के निर्माण का आधार प्रदान करता है। अंतरराष्ट्रीय कूटनीति के संदर्भ में यह संवाद-आधारित संघर्ष समाधान तथा सांस्कृतिक सहअस्तित्व की नीति को सुदृढ़ करने में सहायक हो सकता है।

चर्चा :

प्रस्तुत अध्ययन यह स्थापित करता है कि भगवद्गीता का दर्शन केवल व्यक्तिगत आध्यात्मिक साधना तक सीमित नहीं है, बल्कि एक समग्र मानव-विकास ढाँचा प्रदान करता है, जो मनोवैज्ञानिक, नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा वैश्विक स्तर पर शांति की संरचना को समझने में सक्षम है। गीता का प्रमुख योगदान यह है कि वह शांति को बाहरी राजनीतिक व्यवस्था का परिणाम नहीं मानती, बल्कि व्यक्ति की आंतरिक चेतना की स्थिति से उत्पन्न मानती है।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

आंतरिक चेतना और सामाजिक संरचना का संबंध

गीता के अनुसार सामाजिक संघर्ष का मूल कारण बाह्य संसाधनों की कमी नहीं, बल्कि व्यक्ति की मानसिक असंतुलन, अहंकार, आसक्ति और द्वेष है। समत्व का सिद्धांत इस मानसिक असंतुलन को नियंत्रित कर व्यक्ति में विवेकपूर्ण निर्णय क्षमता विकसित करता है। आधुनिक शांति-अध्ययन (peace studies) में भी यह स्वीकार किया गया है कि स्थायी शांति के लिए psychological transformation आवश्यक है। इस प्रकार गीता का समत्व सिद्धांत आधुनिक conflict psychology के साथ सैद्धांतिक संगति स्थापित करता है।

नैतिक नेतृत्व और निष्काम कर्म

समकालीन राजनीतिक और प्रशासनिक संकटों का एक प्रमुख कारण सत्ता-केन्द्रित नेतृत्व है। गीता का निष्काम कर्म सिद्धांत परिणाम-आसक्ति से मुक्त कर्तव्य-निष्ठ क्रिया का आदर्श प्रस्तुत करता है। यदि इसे आधुनिक प्रशासनिक प्रशिक्षण, सार्वजनिक नीति तथा संस्थागत नेतृत्व में लागू किया जाए, तो निर्णय प्रक्रिया अधिक पारदर्शी और लोकहितकारी बन सकती है। इस संदर्भ में निष्काम कर्म को "ethical action without ego-centric motivation" के रूप में समझा जा सकता है।

लोकसंग्रह और सामाजिक पूंजी

गीता में लोकसंग्रह केवल समाज सेवा नहीं, बल्कि सामाजिक व्यवस्था के संरक्षण का सिद्धांत है। आधुनिक समाजशास्त्र में इसे social cohesion, civic responsibility तथा collective welfare जैसे सिद्धांतों से जोड़ा जा सकता है। लोकसंग्रह का विचार यह स्पष्ट करता है कि व्यक्ति की स्वतंत्रता और सामाजिक उत्तरदायित्व परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। इस प्रकार गीता एक संतुलित समाज मॉडल प्रस्तुत करती है जिसमें व्यक्तिगत उत्कर्ष और सामाजिक कल्याण दोनों साथ चलते हैं।

समदर्शिता और वैश्विक मानवाधिकार विमर्श

गीता में वर्णित समदर्शिता का सिद्धांत सामाजिक समानता की दार्शनिक नींव प्रदान करता है। यह दृष्टिकोण आधुनिक मानवाधिकार सिद्धांतों से गहरे स्तर पर मेल खाता है। जब व्यक्ति सभी प्राणियों में समान चेतना का अनुभव करता है, तब जाति, धर्म, वर्ग और राष्ट्र आधारित भेदभाव स्वतः समाप्त हो सकता है। इस दृष्टि से गीता का दर्शन केवल धार्मिक सहिष्णुता नहीं, बल्कि अस्तित्वगत समानता का सिद्धांत प्रस्तुत करता है।

दैवी सम्पद और सामाजिक संस्थाओं की स्थिरता

गीता में वर्णित दैवी सम्पद को सामाजिक नैतिक पूंजी (moral capital) के रूप में देखा जा सकता है। आधुनिक संस्थागत विफलताओं—भ्रष्टाचार, हिंसा, सामाजिक अविश्वास—का मूल कारण नैतिक मूल्यों का ह्रास है। यदि शिक्षा प्रणाली में दैवी सम्पद आधारित मूल्य-शिक्षा को समाहित किया जाए, तो सामाजिक संस्थाओं की स्थिरता को मजबूत किया जा सकता है।

वैश्विक संदर्भ में गीता मॉडल की प्रासंगिकता

संयुक्त राष्ट्र के SDG-16 का उद्देश्य शांति, न्याय और सुदृढ़ संस्थानों की स्थापना है। UNESCO की शांति-शिक्षा अवधारणा भी संवाद, सहिष्णुता और वैश्विक नागरिकता पर बल देती है। गीता का समत्व, लोकसंग्रह और अद्वेष्टा भाव इन लक्ष्यों के साथ गहरे स्तर पर संगत है। इस प्रकार गीता-आधारित विकास मॉडल केवल दार्शनिक नहीं, बल्कि नीति-निर्माण में भी उपयोगी हो सकता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से स्थापित होता है कि श्रीमद्भगवद्गीता मानव-केन्द्रित समग्र विकास का एक बहु-आयामी दार्शनिक ढाँचा प्रदान करती है, जो व्यक्तिगत आत्म-परिष्कार से आरंभ होकर सामाजिक समरसता और वैश्विक शांति तक

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

की क्रमिक संरचना प्रस्तुत करता है। गीता का प्रमुख योगदान यह है कि वह शांति को केवल बाह्य राजनीतिक संरचना या आर्थिक समृद्धि का परिणाम नहीं मानती, बल्कि उसे व्यक्ति की चेतना, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ती है। गीता का समत्व सिद्धांत मानसिक संतुलन और भावनात्मक परिपक्वता विकसित करता है, जो हिंसा और संघर्ष की प्रवृत्तियों को नियंत्रित करने में सहायक है। निष्काम कर्म और लोकसंग्रह व्यक्ति को आत्म-केन्द्रित जीवन से समाज-केन्द्रित जीवन की ओर प्रेरित करते हैं, जिससे सामुदायिक सहयोग और सामाजिक विश्वास का निर्माण होता है। समदर्शिता और अद्वेष्टा भाव वैश्विक स्तर पर समानता, सहानुभूति और करुणा की भावना विकसित करते हैं, जो अंतरराष्ट्रीय शांति और सहयोग की आधारशिला बन सकते हैं। शैक्षिक दृष्टि से यह मॉडल मूल्य-शिक्षा, शांति-शिक्षा और वैश्विक नागरिकता शिक्षा के लिए एक सुदृढ़ सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है। यदि विद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर गीता के सिद्धांतों को दार्शनिक-शैक्षिक ढाँचे के रूप में समाहित किया जाए, तो यह केवल नैतिक शिक्षा नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व और नेतृत्व विकास का भी प्रभावी माध्यम बन सकता है। नीतिगत स्तर पर यह मॉडल प्रशासनिक प्रशिक्षण, सार्वजनिक नेतृत्व, सामुदायिक विकास कार्यक्रमों तथा अंतरराष्ट्रीय संवाद-नीतियों में भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। विशेष रूप से बहुसांस्कृतिक समाजों में धार्मिक सहिष्णुता और संवाद-आधारित शांति प्रक्रिया के लिए गीता का बहुलतावादी दृष्टिकोण महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करता है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भगवद्गीता केवल एक धार्मिक या आध्यात्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि एक सार्वभौमिक मानव-विकास दर्शन है, जिसे समकालीन शिक्षा, नीति-निर्माण और वैश्विक शांति विमर्श में समाहित कर स्थायी सामाजिक समरसता और विश्व-शांति की दिशा में ठोस प्रगति की जा सकती है।

संदर्भ

अरविन्द, श्री. (1997). गीता पर निबंध (Essays on the Gita). श्री अरविन्द आश्रम।

चिन्मयानन्द, स्वामी. (1995). दि होली गीता. सेंट्रल चिन्मय मिशन ट्रस्ट।

गांधी, एम. के. (2009). अनासक्तियोग: निष्काम कर्म का संदेश. नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।

गोलेमन, डी. (1995). इमोशनल इंटेलिजेंस. बैंटम बुक्स।

हैरिस, आई. एम., एवं मॉरिसन, एम. एल. (2013). पीस एजुकेशन (तीसरा संस्करण). मैकफारलैंड।

हिरियन्ना, एम. (2005). भारतीय दर्शन की रूपरेखा. मोतीलाल बनारसीदास।

नुसबाम, एम. (2011). क्रिएटिंग कैपेबिलिटीज: मानव विकास दृष्टिकोण. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

राधाकृष्णन, एस. (1948). भगवद्गीता. जॉर्ज एलेन एंड अनविन।

राधाकृष्णन, एस., एवं मूर, सी. ए. (1957). भारतीय दर्शन का स्रोत-संग्रह. प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।

रीयर्डन, बी. ए. (1988). समग्र शांति शिक्षा. टीचर्स कॉलेज प्रेस।

सार्जेंट, डब्ल्यू. (2009). भगवद्गीता. एसयूएनवाई प्रेस।

सेन, ए. (1999). डेवलपमेंट ऐज़ फ्रीडम. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

शर्मा, सी. (2013). भारतीय दर्शन का आलोचनात्मक सर्वेक्षण. मोतीलाल बनारसीदास।

तिलक, बी. जी. (1956). श्रीमद्भगवद्गीता रहस्य. केसरी प्रकाशन।

यूनेस्को. (2015). वैश्विक नागरिकता शिक्षा: विषय और अधिगम उद्देश्य. यूनेस्को।

यूनेस्को. (2015). शिक्षा का पुनर्विचार: वैश्विक सार्वजनिक हित की ओर. यूनेस्को पब्लिशिंग।

संयुक्त राष्ट्र. (2015). हमारी दुनिया का रूपांतरण: सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा. संयुक्त राष्ट्र।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम. (2020). मानव विकास रिपोर्ट. यूएनडीपी।

व्यास. (2016). श्रीमद्भगवद्गीता. गीताप्रेस, गोरखपुर।